>

Title: Need to tackle the problem of quality of drinking water in the Gangetic plains.

श्री निखिल कुमार चौधरी (कटिहार): महोदय, बिहार के गंगा के मैदानी भूभाग में ग्राउण्ड वाटर में बड़ी मात्रा में आर्सेनिक पाई जा रही है। कहीं-कहीं यह मात्रा 2100 माइक्रोग्राम प्रति लीटर है। जबकि डब्ल्यूएचओ की रिपोर्ट के अनुसार 10 माइक्रोग्राम प्रति लीटर होना ड्रिंकिंग वाटर में चल सकता है। लेकिन हमारे उस क्षेत्र में, जो गंगा का मैदानी क्षेत्र है, आप उससे वाकिफ हैं, यह 2100 माइक्रोग्राम प्रति लीटर है। यह बड़ी-बड़ी बीमारियों को जन्म देता है, जानलेवा बीमारियां होती हैं। मेरी सरकार से अपील है कि इन क्षेत्रों में, जहां आर्सेनिक भारी मात्रा में पाया गया है, खासकर यह गंगा का मैदानी इलाका, जो मेरी भी कांस्टीट्वेंसी में पड़ता है, वहां इसका पता लगाया जाए, उसे दूर करने के लिए सरकार तवज्जो दे और वहां के लोगों को आर्सेनिकमुक्त पेयजल प्राप्त हो। यही मेरा सब्मिशन है।

श्री पन्ना लाल पुनिया: महोदय, मैं अपने आपको माननीय सदस्य श्री श्री निखिल कुमार चौधरी द्वारा उठाए गए विषय से सम्बद्ध करता हूं।